

Ferdinando Frega – Nando the Scribe

THE BALANCE SHEET

The numbers speak
for themselves.

जिलेट बैलेंस शीट

सबसे मशहूर बैलेंस शीट राज्य की होती है, जिसे एक ही सनक चलाती है: रोशनी को एक ही जगह टिकाए रखना — कमज़ोर हिस्से।

सार्वजनिक क़र्ज़ हमेशा पोल पोज़ीशन पर रहता है, मानो वह कोई ऐसा मरीज़ हो जिसकी किस्मत में हमेशा जीते रहना लिखा है। वह कभी नहीं मरता। उसे अनंतकाल की सज़ा मिली है।

जब भी लोग कहते हैं, “हम मुसीबत में हैं,” पीछे-पीछे वही पुकार आती है: वक़्त आ गया है कि सब गियर बदलें, ज़्यादा मेहनत करें, ज़्यादा ज़िम्मेदार बनें। ऐसे और नहीं चल सकता। अनिवार्य जुमला हमेशा वही होता है: हमें सँभलना होगा।

सुनने में यह ज़िम्मेदारी का एक सामूहिक, राष्ट्रीय क़दम लगता है। फिर भी इसका असर मिनटों में फीका पड़ जाता है, जैसे इसका हमसे कोई लेना-देना ही न हो।

और फिर भी, वह शब्द हमारे चारों ओर गूँजता रहता है, किसी ऐसी चीज़ का बोझ उठाए जो कथित तौर पर दूसरों का किया-धरा है, जबकि हम एक ऐसी हक़ीक़त के भीतर दर्शक बने रहते हैं जहाँ हम जब चाहें चैनल बदल सकते हैं।

फिर आती हैं संगठनों की बैलेंस शीटें: संस्थाएँ, संघ, कंपनियाँ। मक़सद अलग हो सकता है, पर आख़िरी सवाल वही रहता है:

हमने अच्छा किया, या हम और कर सकते थे?

कोई सच्चा मैनेजर शायद ही कभी ऐसी बैलेंस शीट पेश करता है जो घाटों को बारीक ब्योरे के साथ उजागर करे और हर व्यक्ति की ज़िम्मेदारी तय करे। जब जवाब नहीं होते, तो सफ़ाई बन जाती है बाहरी कारक, मानो क़सूरवार कुछ रहस्यमय उलटी हवाएँ हों जिनकी किसी को उम्मीद नहीं थी और जिन्हें कोई पहचान नहीं सकता।

और आख़िर में आती है परिवार की बैलेंस शीट।

फिर एक दिन, आप अपने ही बरस गिनने लगते हैं। शोक-सूचनाएँ याद दिलाती हैं कि लोग मरते हैं, और उम्र एक ज़िंदगी के भीतर कहीं रखी गई एक तारीख़ से ज़्यादा कुछ नहीं।

तभी आपकी निजी बैलेंस शीट आ पहुँचती है।

वह, जिसमें अपना वक़्त आपने कैसे ख़र्च किया इसके ज़िम्मेदार अकेले आप हैं—और उस निवेश का रिटर्न सचमुच सिर्फ़ आप ही जानते हैं।

मनोविज्ञान या दर्शन में उतरे बिना—मैं न डॉक्टर हूँ, न प्रोफ़ेसर—मैं अपनी ताज़ा बैलेंस शीट साझा करना चाहूँगा:

लेखक के रूप में मेरी बैलेंस शीट

आँकड़े खुद बोलते हैं। किसी टिप्पणी की ज़रूरत नहीं।

और फिर हैं लोग।

पाठक जो कुदरती तौर पर आते गए, एक के बाद एक, बिना विज्ञापन के, बिना अभियानों के, बिना रणनीतियों के।

इससे ज़्यादा और क्या किया जा सकता था?

शायद कुछ नहीं।

इसलिए नहीं कि सफ़र पूरा हो गया, बल्कि इसलिए कि सब कुछ कुदरती तौर पर हुआ।

और जब कुदरत रचती है, तो दुनिया सहेजती है।

फर्दिनांदो